This question paper contains 3 printed pages.

B.A. (Pt. - III) Roll No. ....

3102 - II

Nib. Upa. Or Kav.

B.A. (Part - III) EXAMINATION - 2022

(Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-III]

(Three Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न–पत्र

(निबन्ध, उपन्यास और काव्यशास्त्र)

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

downloaded from StudentSuvidha.com

1. निम्नलिखित गद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :–

(क) यह कहकर कल्याणी कमरे के बाहर निकल गई। आँगन में आकर उसने एक बार आकाश की ओर देखा, मानो तारागण को साक्षी दे रही है कि मैं इस घर में कितनी निर्दयता से निकाली जा रही हूँ। रात के ग्यारह बज गये थे। घर में सन्नाटा छा गया था, दोनों बेटों की चारपाई उसी कमरे में रहती थी। वह अपने कमरे में आई, देखा चन्द्रभानु सोया है, सबसे छोटा सूर्यभानु चारपाई पर उठ बैठा है। माता को देखते ही वह बोला–तुम तहाँ दई तीं अम्मा? 9

अथवा

रुक्मिणी द्वार पर खड़ी देर तक रोती रही। आज पहली बार उसे निर्मला पर दया आई, उसका बस होता तो वह निर्मला को बाँध रखती। करुणा और सहानुभूति का आवेश उसे कहाँ लिये जाता है; यह वह अप्रकट रूप से देख रही थीं। आह! यह दुर्भाग्य की प्रेरणा है। यह सर्वनाश का मार्ग है। 9

(ख) निर्मला पर मानो वज्र गिर पड़ा। आँसुओं के आवेग और कंठ–स्वर में घोर संग्राम होने लगा। दोनों पहले निकलने पर तुले हुए थे। दो में से कोई एक कदम भी पीछे हटना नहीं चाहता था। कंठ–स्वर की दुर्बलता और आँसुओं की

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

सबलता देखकर यह निश्चय करना कठिन नही था कि एक क्षण यही संग्राम होता रहा तो मैदान किसके हाथ रहेगा। आखिर दोनों साथ–साथ निकले, लेकिन बाहर आते ही बलवान ने निर्बल को दबा लिया। केवल इतना मुँह से निकला–कोई खास बात नहीं थी। आप तो उधर जा ही रहे हैं। 9

अथवा

क्या जीवन में इससे बड़ी विपत्ति की कल्पना की जा सकती है? क्या संसार में इससे घोरतम नीचता की कल्पना हो सकती है? आज तक किसी पिता ने अपने पुत्र पर इतना निर्दय कलंक न लगाया होगा। जिसके चरित्र की सभी प्रशंसा करते थे, जो अन्य युवकों के लिए आदर्श समझा जाता था, जिसने कभी अपवित्र विचारों को अपने पास नहीं फटकने दिया, उसी पर यह घोरतम कलंक। मंसाराम को ऐसा मालूम हुआ, मानों उसका दिल फटा जाता है। 9

(ग). सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिरनिवृत्ति का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट के नित्य दो–चार प्रहार सहता है। यदि उसमें क्रोध का विकास नहीं हुआ है तो वह केवल आह–ऊह करेगा जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा। 9

अथवा

छायावाद की साहित्य–शैली में एक नयी दिशा का आभास महादेवी जी के काव्य–क्षेत्र में प्रवेश करने पर प्राप्त हुआ है। उनका काव्य पूर्णतः रहस्योन्मुखी और ऐकान्तिक है। छायावाद की सामान्य काव्य–शैली से उनकी पृथकता स्वीकार करनी होगी। इसके पश्चात् बच्चन जी का नया काव्य–वाद हिन्दी के क्षेत्र में आया। इसी समय छायावादी काव्य–शैली के कतिपय अनुयायियों ने यथार्थवादी काव्य–प्रयोग आरम्भ किए, जिनमें, पंत जी एक प्रमुख प्रयोक्ता थे। चित्रण शैली और प्रेरणा–भूमि दोनों में पूर्ववर्ती काव्य की अपेक्षा इनमें पर्याप्त अन्तर दिखाई दिया। 9

(घ) प्राकृत के उपरान्त हमारे देश के साहित्य के दो नमूने और मिलते है, पद्मावत और दूसरा पृथ्वीराज रासो। पद्मावत की कविता में तो किसी कदर कुछ थोड़ा–सा रस है भी, पर पृथ्वीराज रासो में तारीफ के लायक कौन–सी बात है–यह हमारी समझ में बिल्कुल नहीं आता। प्राकृत से उतरते – उतरते हमारी विद्यमान हिन्दी इस शकल में कैसे आई, इस बात का पता अलबत्ता रासो से लगता है। 9

अथवा

सन्त–साहित्य की प्रबल धारा ने समाज के ऐसे स्तरों को जगाया, जो सबसे पीड़ित थे और संस्कृति से वंचित थे। अछूत और नीचे कहलाने वाले लोगों में सन्तों का जन्म हुआ। इन सब लोगों के लिए न मन्दिरों में जगह थी न मस्जिदों में। इनका निर्गुणवाद मन्दिर–मस्जिद, वेद, पुराण और कुरान के विरुद्ध चुनौती बनकर आया है। वे मन्दिर–मस्जिद की सीमाएं नहीं मानते। भले ही इनका द्वार उनके लिए बन्द हो, वह अपने हृदय में साहब का दर्शन कर लेते है। 9

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

2. रामचन्द्र शुक्ल के "क्रोध" निबंध में व्यक्त विचारों का मूल्यांकन कीजिए। 14

अथवा

'भारतीय साहित्य की प्राणशक्ति' निबंध में निहित विचारों को स्पष्ट कीजिए। 14

3. "साहित्य एवं समाज एक–दूसरे से घनिष्ठ सम्बंध रखते है।" 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है," निबंध के आधार पर इस कथन का विश्लेषण कीजिए। 14

अथवा

विद्या निवास मिश्र के निबंधों की भाषा शैली की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 14

4. निर्मला उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 14

अथवा

निर्मला उपन्यास में नारी जीवन की कारुणिक वेदना प्रकट हुई है। कथन के आलोक में निहित विचारों को स्पष्ट कीजिए। 14

5. निर्मला उपन्यास के आधार पर प्रेमचंद की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए। 14

अथवा

निर्मला उपन्यास में निहित समस्या पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। 14

6. (क) काव्य में अलंकारों के महत्व को स्पष्ट कीजिए। 4

अथवा

छंद की परिभाषा एवं स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 4

(ख) शब्द शक्ति किसे कहते है? इनके प्रकारों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 4

अथवा

हरिगीतिका छंद के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। 4

downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com